अणुविभा समाचार

अणुव्रत विश्व भारती का समाचार बुलेटिन

जनवरी –अप्रैल, 2019

अणुव्रत अनुशास्ता का संदेश

आओ हम जीना सीखें

जीवन का आदि बिन्दु है जन्म और उसका अन्तिम बिन्दु है मृत्यु। जीवन का सम्बन्ध आत्मा और शरीर दोनों के साथ है। जहाँ केवल शरीर है वहाँ भी जीवन नहीं होता, जहाँ केवल आत्मा है वहाँ भी जीवन जैसी बात नहीं होती। आत्मा और शरीर दोनों की युति का नाम जीवन है। जन्म धारण करने वाला संसार का हर प्राणी जीता है, फिर भले वह मनुष्य हो, पशु–पक्षी हो अथवा पेड़–पौधे आदि हों। जीना कोई बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात है कलात्मक जीवन जीना। कलात्मक जीवन किसे कहा जाए, इस संदर्भ में अनेक परिभाषाएँ दी जा सकती हैं। जो जीवन धर्म और कौशल से अनुप्राणित होता है, वही कलात्मक होता है।

जीने की कला का प्रमुख सूत्र है– प्रसन्न, प्रशान्त और समाधि में रहना। जो व्यक्ति हर स्थिति में प्रसन्न और शान्त रहना सीख लेता है, वह जीने की कला में कुशल बन सकता है। जीने की कला को सीखने का अर्थ है, जीवन की सभी क्रियाओं को सम्यक् बनाना, अपने दृष्टिकोण को सम्यक् बनाना। इस कला को सीखने के लिए सबसे खास बात यह है कि मनुष्य आत्म–निरीक्षण, आत्म–परीक्षण और आत्म–समीक्षण करना सीखे। आत्मदर्शन की इस प्रक्रिया को अपनाने वाले व्यक्ति की जीवन–पोथी का हर पृष्ठ उजला बन सकता है।

कर्मयोगी की सृजन–यात्रा	3
चेन्नई किडजोन	4
अणुव्रत बालोदय शिविर	5
बालोदय एजुटूर	7
स्कूल विद ए डिफरेन्स	10

मोहनभाई को समाज–भूषण सम्मान

अणुविभा के संस्थापक जाने–माने गाँधीवादी व अणुव्रती कार्यकर्ता स्वर्गीय श्री मोहनलाल जैन को श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ के सर्वोच्च अलंकरण 'समाज–भूषण' से सम्मानित करने की घोषणा 24 सितम्बर, 2018 को चेन्नई में की गई। यह सम्मान 11 फरवरी, 2019 को अणुव्रत अनुशास्ता के सान्निध्य में मर्यादा महोत्सव के अवसर पर कोयम्बटूर में प्रदान किया जाएगा। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित मोहनभाई स्मृति ग्रन्थ लोकार्पण समारोह में महासभा के पंचमण्डल सदस्य श्री अमरचंद लूंकड़ ने यह घोषणा की।

श्री मोहनभाई गुरुदेव श्री तुलसी के अनन्य भक्त थे। उन्हीं की प्रेरणा से उन्होंने अपना जीवन अणुव्रत आन्दोलन के प्रति समर्पित कर दिया था। उनका स्वयं का जीवन भी अणुव्रत दर्शन के अनुरूप संयम व सादगी से परिपूर्ण था। नई पीढ़ी को संस्कारित करना मोहनभाई की विशेष रुचि का विषय था। सरदारशहर में बाल मन्दिर, बापा सेवा सदन, बालिका विद्यालय, बाल बाड़ी जैसी संस्थाओं की स्थापना मोहनभाई के बालप्रेम के उदाहरण हैं। राजसमन्द स्थित चिल्ड्रन'स पीस पैलेस और यहाँ का बालोदय प्रकल्प मोहनभाई की कल्पनाशक्ति, कर्मठता और जुझारूपन की कहानी कहते हैं।

मोहनभाई की सिद्धान्तवादिता और कथनी–करनी की समानता बेजोड़ थी। उन्होंने अपने आठ बेटे–बेटियों के दहेजमुक्त व आडम्बरमुक्त विवाह कर समाज के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया। उनके सेवाकार्यों में उनकी धर्मपत्नी भागीरथी देवी का भी पूरा सहयोग रहता था।

तेरापंथ धर्मसंघ के चार यशश्वी आचार्यों का आशीर्वाद प्राप्त करने वाले मोहनभाई अत्यंत सौभाग्यशाली श्रावक थे। उनकी सेवाओं का सम्मान 'शासनसेवी' एवं 'अणुव्रत सेवी' कार्यकर्ता के रूप में किया गया। अणुव्रत का सर्वोच्च सम्मान 'अणुव्रत पुरस्कार' एवं भारत सरकार के 'राजीव गाँधी मानव सेवा पुरस्कार' सहित अनेक पुरस्कार उन्हें मिले। मोहनभाई को समाज–भूषण सम्मान की घोषणा से अणुविभा परिवार गौरवान्वित अनुभव करता है।

''राजसमन्द स्थित अणुविभा परिसर सुरम्य और दर्शनीय है।
मैंने स्वयं घण्टों लगा कर इसका अवलोकन ही नहीं, गहनावलोकन किया है।
अणुविभा बालपीढ़ी में सुसंस्कार निर्माण के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे, मंगलकामना।''
– आचार्य श्री महाश्रमण

सम्पादकीय

एक सामाजिक संस्था का उद्देश्य होता है– एक बेहतर समाज के निर्माण में सहयोगी बनना। व्यापक परिप्रेक्ष्य में हम यह भी कह सकते हैं कि एक बेहतर इनसान के निर्माण के माध्यम से बेहतर परिवार, बेहतर समाज, बेहतर राष्ट्र और बेहतर विश्व के निर्माण में सकारात्मक भूमिका निभाना प्रत्येक सामाजिक संस्था का दायित्व होता है। इस मूल दायित्व को निभाने में सफलता और विफलता किसी भी सामाजिक संस्था की सफलता और विफलता का पैमाना हो सकता है।

अणुव्रत विश्व भारती की स्थापना 30 दिसम्बर, 1982 को हुई थी। इस संस्था को बनाने के पीछे आचार्य तुलसी का एक दूरदर्शी स्वप्न था– नई पीढ़ी का सद्निर्माण। तब से आज तक, इस संस्था ने आचार्य तुलसी की उस सोच को अपना मिशन बना कर रखा और इस दिशा में निरन्तर आगे बढ़ने का प्रयास किया है। अणुविभा के संस्थापक श्री मोहनभाई ने गुरुदृष्टि की आराधना करते हुए नई पीढ़ी के संस्कार–निर्माण की दृष्टि से अणुव्रत बालोदय के रूप में एक ऐसे प्रकल्प को आकार दिया जो आज संस्कार–निर्माण के क्षेत्र में एक दिशादर्शक प्रकल्प बन गया है।

संस्था की सफलता और विफलता के जिस पैमाने का जिक्र मैंने ऊपर किया है, उस पर यदि अणुविभा को नापने का प्रयास करें तो निश्चय ही इस बात पर गौरव किया जा सकता है कि अणुविभा ने हजारों–हजारों बच्चों के जीवन में रूपान्तरण लाने का प्रयास सफल किया है। निश्चय ही, इन प्रयासों को और आगे बढ़ाने की अपार सम्भावनाएँ हमारे सामने खड़ी हैं। बालोदय कार्यक्रमों में भाग लेने वाले बच्चों एवं अध्यापकों की सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ इस विश्वास को दृढ़ करती हैं।

परम् श्रद्धेय अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अणुविभा का अध्यक्षीय दायित्व मुझ जैसे एक साधारण कार्यकर्ता को सौंपा है। मेरे लिए यह आचार्यप्रवर का आशीर्वाद भी है और आदेश भी। एक चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारी भी। मैं इसे एक अवसर के रूप में भी लेता हूँ। पिताजी आदरणीय मोहनभाई के इस जन्मशती वर्ष में उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने में मैं योगभूत बन सकूँ, यह मेरे लिए अवर्णनीय खुशी की बात होगी।

गुरुदेव के आशीर्वाद के साथ–साथ अणुविभा से जुड़े प्रत्येक कार्यकर्ता का आत्मीय और सक्रिय सहयोग संस्था को लक्षित उद्देश्य की ओर गति से बढ़ाने में निरन्तर प्राप्त हो रहा है, यह संस्था का अहोभाग्य है। मैं यही संकल्प व्यक्त करना चाहता हूँ कि श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने जो विश्वास मुझ पर व्यक्त किया है, मैं उस पर खरा उतरने में कोई कसर नहीं छोड़ूँगा।

– संचय जैन
sanchay_avb@yahoo.com

संचय जैन अणुविभा के नए अध्यक्ष

अणुव्रत विश्व भारती का 28 जुलाई 2018 को चेन्नई (तमिलनाडु) में साधारण सभा का अधिवेशन आयोजित हुआ। संस्था के निवर्तमान महामंत्री श्री संचय जैन को आगामी दो वर्षीय कार्यकाल हेतु सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। अणुव्रत महासमिति नई दिल्ली के अध्यक्ष श्री अशोक संचेती ने निर्वाचन अधिकारी के रूप में इसकी घोषणा की।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने नव निर्वाचित अध्यक्ष को संस्थान का विकास करने की प्रेरणा प्रदान करते हुए वृहद मंगलपाठ सुना कर मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। अणुविभा के संस्थापक श्री मोहनभाई जैन के सुपुत्र श्री संचय जैन पिछले लगभग 30 वर्षों से संस्था से सक्रियता से जुड़े रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि श्री संचय जैन के कार्यों का पूर्व में 'अणुव्रत सेवी' सम्बोधन एवं 'महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार' द्वारा गुरुवर्यों व समाज द्वारा मूल्यांकन किया जा चुका है। इस अवसर पर उपस्थित अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष श्री सोहनलाल गाँधी, श्री तेजकरण सुराणा एवं श्री निर्मल रांका सहित अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने श्री जैन को बधाई दी।

निदेशक परिषद् की बैठक

अणुविभा की नवगठित निदेशक परिषद् की बैठक 'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस' में 11 नवम्बर, 2018 को श्री संचय जैन की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में संस्था के कार्यक्रमों को गति के साथ आगे बढ़ाने का संकल्प व्यक्त किया गया। बैठक में अविनाश नाहर, राकेश नौलखा, जगजीवन चौरड़िया, प्रकाश तातेड़, डॉ. राकेश तैलंग, अशोक डूंगरवाल, सुरेश कावड़िया, गणेश कच्छारा, अशोक डोसी, डॉ. कुंजन आचार्य, महेन्द्र गुर्जर, दिनेश कोठारी, डॉ. सीमा कावड़िया, सुनील जैन, क्षितिज व्यास, पवन कोठारी, भीखम कोठारी, सत्यनारायण नागौरी, प्रकाश मेहता, दिनेश लोढ़ा, लक्ष्मण जैन, डॉ. नीना कावड़िया, प्रमोद सोनी उपस्थित रहे।

कर्मयोगी की सृजन-यात्रा

अणुविभा द्वारा प्रकाशित श्री मोहनलाल जैन स्मृति-ग्रन्थ 'कर्मयोगी की सृजन-यात्रा' में उनके जीवन के विभिन्न पक्षों को शामिल किया गया है। मोहनभाई की जन्मशती के अवसर पर इस प्रकाशन का महत्त्व और भी बढ़ गया है। अणुविभा कार्यालय (9783816238) में ग्रन्थ की प्रति उपलब्ध है।

मोहनभाई स्मृति-ग्रन्थ का लोकार्पण

अणुव्रत आन्दोलन के समर्पित कार्यकर्ता एवं अणुव्रत विश्व भारती के संस्थापक श्री मोहनलाल जैन (मोहनभाई) के व्यक्तित्व व कर्तृत्व पर अणुविभा द्वारा प्रकाशित स्मृति ग्रन्थ 'कर्मयोगी की सृजन यात्रा' का विमोचन मोहनभाई के 100वें जन्मदिन 24 सितम्बर, 2018 को अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में राजस्थान पत्रिका के प्रबन्ध सम्पादक डॉ. गुलाब कोठारी ने किया एवं इसकी प्रथम प्रति आचार्यश्री को भेंट की।

अपने उद्‌बोधन में आचार्य श्री ने कहा कि मोहनभाई के जीवन में कर्मठता का दर्शन होता है। सरदारशहर के पास एक हरिजन गांव बरड़ासर में राष्ट्रीय स्तर के अणुव्रत अधिवेशन, डूंगरगढ़ में मर्यादा महोत्सव के दिन हरिजन सम्मेलन के आयोजन जैसे कार्यों को मैंने स्वयं अपने बचपन में देखा था। मोहनभाई के जीवन से न केवल परिवार के लोगों को, समाज के लोगों को भी, और हम सभी को कर्मठता से और धुन से काम करने जैसे गुणों की प्रेरणा मिलती रहेगी।

साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभा ने अपने उद्‌बोधन में कहा– मोहनलालजी बहुत साधारण व्यक्ति थे। लेकिन उन्होंने अपने जीवन में साधारण कार्यों को भी असाधारण ढंग से किया। उनमें काम करने की धुन थी। वे प्रतिबद्ध हो जाते थे अपने काम के प्रति। काम करने की रुचि एक बात है और प्रतिबद्धता दूसरी बात। एक प्रतिबद्ध व्यक्ति उन सौ व्यक्तियों से भी अधिक महत्त्वपूर्ण होता है जो केवल अपनी रुचि के लिए काम करते हैं। मोहनभाई ने अपने जीवन में कई काम किए। वे सौभाग्यशाली थे कि उन्हें चार–चार आचार्यों के दर्शन करने का, उनकी उपासना करने और उनसे मार्गदर्शन पाने का मौका मिला।

मोहनभाई के 100वें जन्मदिन पर आयोजित इस कार्यक्रम में बोलते हुए डॉ. गुलाब कोठारी ने कहा कि महापुरुष स्वयं के लिए नहीं वरन दूसरों के लिए जीते हैं। सुख के पीछे भागने वाले एवं दुःखों से बच कर निकलने का प्रयास करने वाले कभी मोहनभाई नहीं बन सकते। मोहनभाई ऐसा कुछ लेकर पैदा नहीं हुए थे जो हम सबसे न्यारा हो, अनूठा हो लेकिन वे शरीर में जीने वाले व्यक्ति नहीं थे। उन्होंने संस्कारों को जीया। उनका जीवन लक्षित था। उन्होंने औपचारिक शिक्षा को प्रोत्साहित करने की बजाय जीवन शिक्षा की ओर कदम बढ़ाए।

इस अवसर पर अणुविभा के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सोहनलाल गाँधी एवं अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष श्री तेजकरण सुराणा ने भी मोहनभाई के व्यक्तिव के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष निर्मल रांका एवं भागीरथी सेवा प्रन्यास के प्रबन्ध न्यासी श्री पंचशील जैन ने ग्रन्थ विमोचन हेतु प्रति भेंट की। श्री विकास जैन व श्री विनय जैन ने मोहनभाई के जीवनवृत्त पर निर्मित डोक्यूमेण्टरी फिल्म 'एक कर्मयोगी' अतिथियों को भेंट की। मोहनभाई की पुत्रियों वीणा पींचा, मंजुला गुजरानी, संगीता बरड़िया तथा पुत्रवधुओं कौशल्या, रितु व संगीता जैन ने साध्वीप्रमुखाजी को ग्रन्थ की प्रति भेंट की।

कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष संचय जैन ने किया। इस अवसर पर प्रकाश तातेड़, डॉ. रोकश तैलंग, अमेरिका की सूजैन सीट्स, गणेश कच्छारा, जगजीवन चौरड़िया,

अणुव्रत बालोदय किडजोन

अणुविभा गत 3 दशकों से बाल शिक्षा व संस्कार के क्षेत्र में रचनात्मक कार्य कर रही है। 'अणुव्रत बालोदय किडजोन' इसी प्रकल्प की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। इसका उद्देश्य है, चतुर्मास प्रवास के दौरान श्रद्धेय अणुव्रत अनुशास्ता के दर्शनार्थ आने वाले बच्चों को जीवन–निर्माण में सहयोग करना।

अणुविभा का सफल प्रयास 'चेन्नई किडजोन'

गुवाहाटी (2016) और कोलकाता (2017) के बाद चेन्नई (2018) में 'अणुव्रत बालोदय किडजोन' क्रमशः नई ऊँचाइयाँ छूते हुए प्रगतिपथ पर अग्रसर हुआ। चेन्नई किडजोन अनेक दृष्टियों से विशिष्ट रहा। आचार्य प्रवर के प्रवास स्थल के सन्निकट होने से बच्चों व अभिभावकों दोनों के लिए ही यह न केवल सुविधाजनक था वरन सुरक्षा की दृष्टि से भी श्रेष्ठ था। 5 अगस्त को प्रवचन के पश्चात पूज्यप्रवर के पदार्पण के साथ किडजोन का शुभारम्भ हुआ।

सम्पूर्ण चतुर्मास काल में प्रतिदिन प्रातः 9 से सायं 5 बजे तक यह केन्द्र बच्चों के लिए खुला रहता था। यहाँ बाल पुस्तकालय, फिल्म शो, विभिन्न इनडोर गेम्स, 5 वर्ष से छोटे बच्चों के लिए खेल के साधन आदि की व्यवस्था थी। प्रत्येक रविवार को मुनिश्री जितेन्द्र कुमारजी द्वारा लड़कों के लिए एवं साध्वीश्री प्रांजलयशाजी द्वारा लड़कियों के लिए वार्ताएँ व एक्टिविटीज बच्चों के लिए आकर्षण का विषय रहती थीं। प्रत्येक स्कूली अवकाश के दिन कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता था। 11 नवम्बर को दीक्षा समारोह के दिन बाल–मेला आयोजित हुआ।

चेन्नई चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के उदार सहयोग के बिना 'अणुव्रत बालोदय किडजोन' की स्थापना व चार माह तक सफल संचालन सम्भव नहीं था, जिन्होंने महत्त्वपूर्ण स्थान पर 2400 वर्गफीट वातानुकूलित हॉल उपलब्ध कराया। 22 नवम्बर, 2018 को पूज्यप्रवर के सान्निध्य में अणुविभा के अध्यक्ष श्री संचय जैन एवं परामर्शक श्री बजरंग जैन ने व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री धर्मचन्द लूंकड़ को स्मृति–चिह्न भेंट कर उनका सम्मान किया।

इस अवसर पर चेन्नई किडजोन के समन्वयक श्री महावीर संचेती, संयोजिका सुश्री कृतिका सेठिया, संचालिका श्रीमती कल्पना जैन व सहसंचालिका उषा सेठिया को भी स्मृति–चिह्न भेंट कर उनकी सेवाओं का सम्मान किया गया। चेन्नई किडजोन टीम का श्रम व समर्पण भाव प्रशंसनीय रहा। संचालन में सहयोगी बने बाल स्वयंसेवकों को भी प्रशस्ति–पत्र भेंट किए गए। अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष श्री निर्मल रांका, उपाध्यक्ष श्री गौतम सेठिया एवं श्री मनीष गिड़िया का भी महत्त्वपूर्ण सहयोग व परामर्श इस प्रकल्प हेतु प्राप्त हुआ है। चेन्नई के लोकेश दुधेड़िया, श्रीमती कल्पा, न्यूयॉर्क से साक्षी जैन, अलमोड़ा के श्री उदय किरोला का योगदान भी सराहनीय रहा।

कुल मिला कर यह बालकेन्द्र बच्चों के आकर्षण का केन्द्र बना रहा। अनेक अभिभावकों का कहना था कि बच्चे हमारे साथ आने को उत्सुक रहते हैं। इससे जहाँ बच्चों को हमारे संस्कारों से जुड़े रहने में मदद मिली है वहीं अभिभावकों ने भी अपनी धर्माराधना में व अन्य जिम्मेदारियों को वहन करने में सुविधा महसूस की है। चतुर्मासकाल में लगभग 2000 बच्चे 'अणुव्रत बालोदय किडजोन' से लाभान्वित हुए। आशा ही नहीं अपितु दृढ़ विश्वास है कि पूज्यप्रवर के आशीर्वाद से भविष्य में यह प्रकल्प और भी अधिक आकर्षक, प्रभावी और परिणाममूलक बन सकेगा और नई पीढ़ी को हमारे संस्कारों से जोड़े रखने में एक सेतु का काम करेगा।

किडजोन के संचालन हेतु जिस उदार और सहज भाव से चेन्नई के श्री निर्मल जी गादिया ने अर्थ सौजन्य प्रदान किया, अणुविभा उनकी सदैव आभारी रहेगी। 5 अगस्त, 2018 को गुरुदेव के मंगल आशीर्वाद के पश्चात आपकी मातुश्री सुशीला बाई ने प्रथम प्रवेश कर किडजोन को बच्चों के लिए खोला।

अणुव्रत बालोदय शिविर

बालोदय शिविर अणुविभा का एक विशिष्ट प्रकल्प है। इन शिविरों में बच्चे एक अच्छा इनसान बनने का मार्गदर्शन खेल-खेल में पा लेते हैं। पिछले कुछ समय में नियमित रूप से आयोजित हो रहे शिविरों में गुणवत्ता व प्रभावशीलता की दृष्टि से नए प्रयोग किए जा रहे हैं जिनका सकारात्मक असर स्पष्ट देखा जा सकता है।

अणुव्रत बालोदय शिविरों का निखरता स्वरूप

पिछले कुछ माह में 3 तीन दिवसीय आवासीय शिविर एवं अनेक एक दिवसीय शिविर आयोजित हुए जिनमें आलोक उच्च माध्यमिक विद्यालय, ऑरेन्ज काउण्टी स्कूल, नोबल पब्लिक स्कूल, सविता इंटरनेशनल, गुरुकुल विद्या मन्दिर, गायत्री पब्लिक स्कूल, सुप्रभात उच्च प्राथमिक विद्यालय, श्री मातेश्वरी विद्या मन्दिर, नव प्रभात शिक्षण संस्थान, जय प्रभात पब्लिक स्कूल, नव ज्योति पब्लिक स्कूल, प्रगति पब्लिक स्कूल, आदर्श विद्या मन्दिर स्कूलें शामिल हुई।

प्रत्येक शिविर में आचार्य तुलसी द्वारा रचित 'अणुव्रत गीत' शिविरार्थी बच्चों के लिए एक सशक्त संदेश की भूमिका निभाता है। गीत के प्रत्येक पद्य पर बच्चों के साथ संवादशैली में चर्चा होती है। छोटे-छोटे व्रतों के जीवन में महत्त्व को समझने के दौरान अनेक बच्चे स्वेच्छा से संकल्प भी ग्रहण करते हैं।

समूह निर्माण का सत्र जहाँ रोचकता से भरपूर होता है वहीं बच्चों को सहअस्तित्व व पारस्परिकता की भवना का सहज अभ्यास भी हो जाता है। इन समूहों में अलग-अलग विद्यालयों के बच्चे शामिल होते हैं जो परस्पर परिचय का आदान-प्रदान करते हैं, रुचि व विशेषताओं को जानते हैं और आपसी सहमति से समूह के नाम व नेता का चयन करते हैं। फिर सामूहिक सत्र में समूह के नेता ही मंच पर बैठते हैं एवं अपने-अपने समूह की विशेषताओं का परिचय देते हैं और समूह में हुई गतिविधि की जानकारी भी देते हैं।

प्रातःकालीन सत्र में भी बच्चों को प्रेरित करने के लिए नए प्रयोग किए जाते हैं। ऐसे ही एक सफल प्रयोग में चार ऐसे बच्चों को सत्र के अध्यक्ष मण्डल में शामिल किया गया जो पूर्व रात्रि 10 बजे से पहले सो गए थे और चार ऐसे बच्चों को भी मंच पर स्थान मिला जो अर्धरात्रि तक जगे रहे लेकिन इस बात को ईमानदारी से स्वीकार किया। सत्र संचालन बच्चों के लिए एक नया अनुभव था। अनेक बच्चों ने भविष्य में जल्दी सोने की आदत डालने का संकल्प लिया। 'मोक पार्लियामेण्ट' का अनुभव भी बच्चों के श्रेष्ठ अनुभवों में से एक रहता है। इसकी सम्पूर्ण प्रक्रिया में बच्चों की ही भूमिका रहती है और लोकतांत्रिक मूल्यों को बच्चे न सिर्फ समझते हैं बल्कि प्रयोग भी करते हैं। अध्यक्ष के चुनाव से ले कर विषय का निर्धारण, पक्ष-विपक्ष की भूमिका, अपना वक्तव्य बनाना जैसे विभिन्न कार्य बच्चे स्वयं लोकतांत्रिक पद्धति से करते हैं।

तुलसी अणुव्रत दर्शन दीर्घा में संस्कार निर्माण प्रदर्शनी के एक-एक चित्र के भावार्थ को समझना व प्रश्नोत्तरी के माध्यम से महत्त्वपूर्ण तथ्यों को आत्मसात करने का प्रयास प्रत्येक बालोदय प्रकल्प की एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति रहती है। जीवन विज्ञान सत्र में योग, प्राणायाम व आसनों के महत्त्व को समझने का क्रम रहता है। ऑडियो-विज्यूअल हॉल में बाल-फिल्मों का प्रदर्शन व उन पर आधारित संवाद बच्चों को बाँधे रखता है।

बालोदय शिविर में सभी बच्चे सोने से पहले डायरी लिखते हैं एवं सुबह के सत्र में प्रत्येक समूह से एक-दो बच्चे अपनी डायरी का वाचन करते हैं। इन शिविरों की खासियत यह है कि यहाँ बच्चे खुल कर अपनी बात रखते हैं और गलतियों को स्वेच्छा से स्वीकार करने में भी नहीं झिझकते।

सब मिला कर शिविर के माहौल में बच्चे इतने रच-बस जाते हैं कि यहाँ मिल रहे जीवन सन्देश को सहज में आत्मसात कर लेते हैं और यही इन शिविरों का उद्देश्य भी है। शिविर से लौटते समय बच्चों के भावुक चेहरे इस यथार्थ को स्वयं बयान करते हैं। जब कुछ बच्चों से पूछा गया कि यदि शिविर को एक दिन के लिए और बढ़ा दिया जाए तो कौन-कौन रुकना चाहेंगे ? सभी बच्चे चहक कर बोल पड़े कि हम एक महीना भी यहीं रुकने को तैयार हैं।

अणुविभा अध्यक्ष श्री संचय जैन, मंत्री एवं बालोदय संयोजक श्री प्रकाश तातेड़, 'स्वाद' संयोजक डॉ. राकेश तैलंग, प्रबन्धक श्री विमल जैन, बालोदय प्रभारी श्री देवेन्द्र आचार्य, जीवन विज्ञान प्रभारी श्री साबिर शुक्रिया, 'स्वाद' प्रभारी श्री कमल साँचीहर, सहप्रभारी श्रीमती रुखसाना, प्रभा सनाढ्य का निरन्तर योगदान बना रहता है।

ज्ञानशाला और बालोदय

अणुविभा का बालोदय कार्यक्रम और महासभा का ज्ञानशाला प्रकल्प बाल विकास को केन्द्रित विशिष्ट उपक्रम हैं। ज्ञानशाला के बच्चों को विशेष अवसर उपलब्ध कराने के लिए अणुविभा सदैव तत्पर रहती है। समय-समय पर ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन इस समन्वय को पुष्ट करता है।

17 ज्ञानशालाओं के 257 बच्चे हुए लाभान्वित

अणुविभा के सुरम्य वातावरण में 30 दिसम्बर से 2 जनवरी तक आयोजित 4 एकदिवसीय बालोदय शिविरों की श्रृँखला में भीलवाड़ा, बिजयनगर, आसींद, दौलतगढ़, करेड़ा, राजनगर, कांकरोली, धोइंदा, केलवा, पाहुंना, कपासन, आकोला, रावलिया, नाथद्वारा, आमेट, भीम, देवगढ़ की ज्ञानशालाओं के 257 बालक–बालिकाओं ने भाग लिया। साथ ही 50 प्रशिक्षकाओं ने सहभागी बन बालोदय शिक्षणशैली को समझा व इसे अपनाने की इच्छा व्यक्त की।

इन शिविरों को सान्निध्य प्रदान करते हुए शासनश्री मुनि श्री सुरेशकुमार जी 'हरनावां' ने 'लिमिट द अनलिमिट्स' का सन्देश देते हुए बच्चों को महान बनने का मार्ग बताया। उन्होंने कहा– ''महान लोग आसमान से नहीं गिरते। महान होने के लिये एक सूत्र को जीवन मंत्र बना लें– सहन करो, सफल बनो।''

मुनिश्री सम्बोधकुमार जी ने बच्चों को यह कहते हुए 'फ्रेम योर फ्यूचर' का सन्देश दिया– ''जिन्दगी सिर्फ सांसों के आने–जाने का नाम नहीं है, जिन्दगी इससे भी आगे कुछ है। जीवन जीने का असली स्वाद तभी मिलता है जब जो आदतें हमें परेशान करें उन्हें हम रोज 'नो मोर' कहना शुरू कर दें। यही अणुव्रत को अपना आदर्श बनाने का शॉर्ट कट है।'' मुनिश्री ने स्मृति विकास और तनाव मुक्ति के प्रयोग भी करवाए। मुनिश्री प्रतीककुमार जी ने भी बच्चों को प्रेरक सीख दी।

मुम्बई से समागत मुख्य प्रशिक्षिका श्रीमती मीना बडाला ने स्टोरीटेलिंग व ऑडियो–विज्युअल्स के माध्यम से बच्चों को बाँधे रखा। माटीवेशनल एक्टिविटीज के साथ ही उन्होंने 'ज्ञानशाला खेल–खेल में' कार्यक्रम भी आयोजित किया। बच्चों ने तुलसी दीर्घा, अणुव्रत दीर्घा व बाल संसद का अवलोकन करने के साथ उससे जुड़ी क्विज में हिस्सा लिया एवं प्रेरणादायक मूवी मोंक एंड मंकी और लिटिल बोट देखी।

बच्चों ने अपने अनुभव को उत्साह के साथ साझा किया। सबके प्रफुल्लित चेहरे उनके दिल के भावों को खुद बयान कर रहे थे। शिविर में आए कृष ने बताया कि उसने सीखा कि जीवन में कुछ भी असम्भव नहीं है। पायल ने बताया कि सपने को कैसे फ्रेम करें। निधि ने बड़ों का आदर करना सीखा। इशीका बोहरा को मुम्बई से आई ट्रेनर मीना बड़ाला का प्रशिक्षण का अंदाज भाया। जीतेन्द्र को बाल संसद तथा मूवी पसन्द आई। सुजल ने व्यसन मुक्ति का संकल्प लिया। चिरायु ने ध्यान की मुद्राएँ सीखी। बच्चों ने सच्चाई के मार्ग पर चलना, सहनशील बनना, अनुशासन में रहना, कभी हार नहीं मानना जैसे मूल्य भी सीखे। अनेक बच्चों ने संकल्प लिए। कुछ बच्चों ने कहा कि शिविर का समय एक दिन कम है इसका समय और बढ़ाना चाहिए।

शिविर संयोजिका श्रीमती ऋतु धोका ने इस आयोजन में मुख्य भूमिका निभाई। सर्वश्री अशोक डूंगरवाल, गणेश कच्छारा, प्रकाश तातेड़ एवं दिनेश कोठारी की सक्रिय सहभागिता के साथ ही विमल जैन, रुखसाना बेगम, प्रभा सनाढ्य, देवेन्द्र आचार्य आदि कार्यकर्ताओं का उल्लेखनीय सहयोग रहा।

रेणु छाजेड़ आमेट, अंजना गोखरू आसीन्द, सपना कोठारी भीलवाड़ा, नीलू कोठारी केलवा, कुसुम बडाला, वन्दना कोठारी कांकरोली, प्रज्ञा लोढ़ा इन्दौर, आशा सोनी, नीना कावड़िया, सीमा धोका, मीना नवलखा, करूणा मेहता, उर्मिला सोनी राजसमन्द, नीतू बाबेल का सहयोग सुचारू संचालन का हेतु बना।

इस आयोजन में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महासभा के ज्ञानशाला प्रकोष्ठ राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनराज चौपड़ा का मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त हुआ। अणुविभा द्वारा स्कूलों के लिए 'बालोदय एजुटूर' शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम संचालित किया जाता है, उसी रूप में देशभर की ज्ञानशालाओं के लिए विशेष कार्यक्रम ज्ञानशालाओं के अनुरोध पर आयोजित किया जा सकता है।

बालोदय एजुटूर

अणुविभा द्वारा लम्बे समय से आयोजित किए जा रहे बालोदय शिविरों से 'बालोदय एजूटूर' कुछ अलग है। इसमें बच्चों को बालोदय प्रवृत्तियों के साथ–साथ मेवाड़ के ऐतिहासिक दर्शनीय स्थलों के उद्देश्यपरक भ्रमण को भी शामिल किया गया है। स्कूलों के शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम को यह अविस्मरणीय बना देता है।

'बालोदय एजुटूर' की सफल शुरुआत

अणुव्रत विश्व भारती द्वारा संचालित बाल–संस्कार निर्माण के विभिन्न प्रकल्पों की कड़ी में 'बालोदय एजूटूर' नाम से नई प्रवृत्ति का शुभारम्भ किया गया। इसके अन्तर्गत देश के विभिन्न भागों से शैक्षिक भ्रमण के लिए आने वाली स्कूलों को मेवाड़ भ्रमण से साथ–साथ बच्चों के आदर्श व्यक्तित्व निर्माण के लक्ष्यगत विभिन्न कार्यक्रमों को शामिल किया गया। आने वाले समय में 'बालोदय एजूटूर' के माध्यम से 'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस' एक आकर्षण का केन्द्र बन जाएगा, 1 से 3 सितम्बर, 2018 को आयोजित प्रथम बालोदय एजुटूर से इन सम्भावनाओं को बल मिला है।

अणुविभा द्वारा लम्बे समय से आयोजित किए जा रहे बालोदय शिविरों से 'बालोदय एजुटूर' कुछ अलग है। इसमें बच्चों को बालोदय प्रवृत्तियों के साथ–साथ मेवाड़ के ऐतिहासिक दर्शनीय स्थलों के उद्देश्यपरक भ्रमण को भी शामिल किया गया है। पहले 'बालोदय एजुटूर' में शामिल सीकर की ज्ञानज्योति एकेडमी के 56 विद्यार्थियों व शिक्षकों के समूह के अनुभवों को बताते हुए स्कूल के प्रबंधक सैयद आसीफ ने बताया कि ऐसे टूर की हमने कल्पना भी नहीं की थी। 'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस' जैसी प्राकृतिक स्थली बच्चों को स्वर्गिक आनन्द की अनुभूति करा रही है।

उल्लेखनीय है कि टूर के पहले दिन बच्चों ने बालोदय प्रवृत्तियों में भाग लिया और कुम्भलगढ़ दुर्ग की ऐतिहासिकता से दो चार हुए। रात में लाइट एण्ड साउण्ड शो का भी आनन्द लिया। दूसरे दिन उदयपुर में सहेलियों की बाड़ी, फतेहसागर, प्रताप स्मारक आदि दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करते हुए लोककला मण्डल में कठपुतलियों व लोकनृत्य से भी रूबरू हुए। तीसरे दिन हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप की शौर्य गाथाओं ने बच्चों को रोमान्चित किया। राजसमन्द की नौचौकी में वैज्ञानिकता और कलात्मकता का सम्मिश्रण देख बच्चे चकित रह रह गए। पूरे समूह का रात्रि प्रवास अणुविभा के अतिथिगृह में रहा एवं यहाँ के सात्विक भोजन का सबने आनन्द लिया। प्रातःकालीन योगा सत्र, सायंकालीन सांस्कृतिक संध्या एवं बस यात्रा में रोचक गेम्स व एक्टिविटीज ने इस शैक्षिक भ्रमण को गुणवत्ता के नए आयाम प्रदान किए।

विश्व पुस्तक मेले में बच्चों का देश

नई दिल्ली के प्रगति मैदान में 5 से 13 जनवरी, 2019 को आयोजित हुए विश्व पुस्तक मेले में 9 जनवरी को 'बच्चों का देश' द्वारा कार्यशाला का आयोजन विशेष महत्त्व की बात रही। मेले की आयोजक संस्था नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा अणुविभा को कार्यशाला के लिए मिला आमंत्रण, पत्रिका को मिल रही राष्ट्रीय पहचान और मान्यता की ओर संकेत है। बाल पत्रिका के सम्पादन से बच्चों को परिचित कराने के लिए बाल मण्डप में हुई इस कार्यशाला में बच्चों के समूह बना कर उनके सुझाव भी आमंत्रित किए गए। अणुविभा के कार्यकारिणी सदस्य एवं बच्चों का देश के नियमित कलमकार श्री रजनीकांत शुक्ल ने कुशलता के साथ कार्यशाला को संयोजित किया।

आप की नजर में बच्चों का देश

बच्चों की बौद्धिक एवं मानसिक परितृप्ति तथा आत्मतोष के लिए उत्कृष्ट सामग्री से ओत–प्रोत 'बच्चों का देश' पढ़कर अतीव आनन्द की अनुभूति हुई। अब यह बाल पत्रिका सम्प्रति देश से निकलने वाली प्रतिष्ठित बाल पत्रिकाओं में सबसे आगे खड़ी दिखाई पड़ती है।

– **सीताराम पाण्डेय,** मुजफ्फरपुर (बिहार)

इस प्रतिष्ठित पत्रिका से साक्षात होने का यह मेरा पहला अवसर है। पत्रिका में शामिल सब कृतियों से बच्चों के आचरण व व्यवहार में सकारात्मकता विकसित होगी।

– **राजेन्द्र श्रीवास्तव,** विदिशा (मध्यप्रदेश)

बच्चों का देश में साहित्य, विज्ञान, मनोरंजन, सामान्य ज्ञान, सूचनाएँ आदि बालपयोगी रचनाएँ युवाओं तथा वृद्धों के लिए भी पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। यह पत्रिका की अपनी विशेषता है।

– **सुरेन्द्र वाजपेयी,** वाराणसी (उत्तरप्रदेश)

अणुव्रत बालोदय

बहुआयामी गतिविधियाँ : बहुरंगी झलकियाँ

स्कूल विद ए डिफरेन्स

मात्र स्कूली शिक्षा एवं किताबी ज्ञान बच्चों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व निर्माण में सफल नहीं हो सकता। राजसमन्द जिले की स्कूलों के लिए 'स्कूल विद ए डिफरेन्स' प्रोजेक्ट औपचारिक शिक्षा पद्धति की कमियों व सीमाओं को समाहित करते हुए बच्चों को जीवन निर्माण का बेहतर मार्ग प्रशस्त करता है।

100 स्कूलों में पहुँचे बालोदय कार्यकर्ता, स्कूलों में बढ़ा आकर्षण

अणुविभा के विभिन्न बालोदय प्रकल्प इस दिशा में काम करते हैं कि जीवन–निर्माणात्मक ऐसे रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से, जो बच्चों के मनोविज्ञान को समझते हुए उनमें मानवीय मूल्यों की समझ और विवेक विकसित कर सके, बच्चों को प्रेरित किया जाए। अणुविभा पिछले अनेक वर्षों से चयनित 50 स्कूलों में 'स्कूल विद ए डिफरेन्स' कार्यक्रम को संचालित कर रही थी। इस वर्ष इस योजना को सम्पूर्ण जिले में लागू किया गया जिसके तहत जिले की 7 पंचायत समितियों में कार्यकर्ताओं की टीम बनाकर इसे गति प्रदान की गई। जाने–माने शिक्षाविद् डॉ. राकेश तैलंग के संयोजकत्व में इस हेतु सघन सम्पर्क अभियान चलाया गया। प्रसन्नता की बात यह है कि सभी स्कूलों ने इस योजना को अपने यहाँ लागू करने के प्रति रुचि दिखाई। जिला कलक्टर एवं जिला शिक्षा अधिकारीगण ने भी अपनी अनुशंसा देते हुए इस कार्यक्रम को बच्चों के व्यापक हित में बताया।

'स्कूल विद ए डिफरेन्स' कार्यक्रम को प्रतिष्ठित शिक्षाविद् एवं अणुविभा के संयुक्त प्रबन्ध न्यासी श्री सुरेश कावड़िया का मुख्य समन्वयक के रूप में सक्रिय मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। कलाविद् कमल साँचीहर, श्रीमती रुखसाना, श्री साबिर शुक्रिया एवं देवेन्द्र आचार्य निरन्तर स्कूलों में कार्यशालाएँ आयोजित कर बच्चों को इस अभियान से जोड़ रहे हैं। विषय विशेषज्ञ के रूप में श्री हरिनारायण डाबी, श्री जगदीश चन्द्र चौधरी, श्री घनश्याम दैया, डॉ. आर.के. शर्मा, डॉ. विमल कावड़िया, श्री बंकेश सनाढ्य का अनुभवजन्य सहयोग इस कार्यक्रम को मजबूती प्रदान कर रहा है। एसआईईआरटी के पूर्व निदेशक श्री शरद चन्द्र पुरोहित के परामर्शक के रूप में जुड़ने से इस कार्यक्रम की गुणवत्ता और भी बढ़ गई है।

क्षेत्रीय समन्वयक के रूप में देवगढ़ में श्री प्रकाश मेहता, आमेट में श्री गणपत डाँगी, भीम में श्री सुनील मुणोत, कुंभलगढ़ में श्री जसराज सरगरा व श्री सत्यनारायण नागौरी, राजसमन्द में श्रीमती नीना कावड़िया, नाथद्वारा में श्री कमलेश धाकड़ इस कार्यक्रम के स्कूलों में प्रभावी क्रियान्वयन में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

विदेशी मेहमानों का बढ़ रहा जुड़ाव

अणुविभा के इन रचनात्मक प्रयासों से आकर्षित होकर अनेक विदेशी शिक्षाविद् एवं सामाजिक कार्यकर्ता इन कार्यक्रमों में अपनी सक्रिय सहभागिता दे रहे हैं। इसी कड़ी में अमेरिका से समागत सामाजिक कार्यकर्ता सुजैन, योग प्रशिक्षक सामन्ता एवं डांस थेरैपिस्ट मेलिसा ने बच्चों के बीच जाकर वर्कशॉप्स आयोजित की। इनमें मैजिक, खेल–खेल में माइण्ड पावर गेम्स, पार्टनर योगा आदि बच्चों के लिए अत्यन्त रूचिकर रहे। अणुविभा परिसर में आयोजित एक शिक्षक सम्वाद में इन विदेशी महमानों ने शिक्षा से जुड़े अनेक पहलुओं पर चर्चा की। अमेरिका में काम ली जाने वाली शिक्षणशैली का प्रदर्शन किया।

सहभागी बच्चों की संख्या के साथ उन विद्यालयों के नाम यहाँ दिए जा रहे हैं जहाँ अणुविभा कार्यकताओं के साथ सुजैन, सामन्ता एवं मेलिसा ने कार्यशालाओं का आयोजन किया– राजकीय उ. प्रा. विद्यालय, वीरभानजी का खेड़ा (50), सोफिया सीनियर सेकण्डरी स्कूल, कांकरोली (300), गायत्री विद्या मन्दिर शक्तिपीठ, राजनगर (250), सविता इंटरनेशनल नान्दोली (300), मयूर पब्लिक स्कूल, मादड़ी (50)

श्री जुगराज नाहर का उदार सहयोग

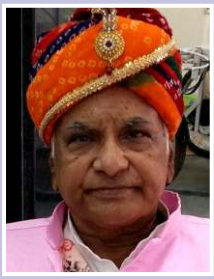

राजसमन्द जिले में 'स्कूल विद ए डिफरेन्स' प्रोजेक्ट के सफल संचालन हेतु दिवेर निवासी एवं चेन्नई प्रवासी उदारमना भामाशाह श्री जुगराज जी नाहर ने अत्यन्त आत्मीयता एवं उदारता के साथ अणुविभा को 11 लाख रुपयों का अनुदान प्रदान कर संस्था को नई मजबूती प्रदान की है। अणुविभा परिवार की ओर से हार्दिक अभिनन्दन।

अमेरिकन गाँधी का अणुविभा प्रेम

भाईचारे, शान्ति व अहिंसा की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए अमेरिकन गाँधी के नाम से प्रसिद्ध बर्नी मेयर पिछले अनेक वर्षों से राजसमन्द आते रहे हैं। इन्हें अणुविभा, यहाँ का परिसर, कार्यकर्ता और कार्यक्रम इतने प्रिय हैं कि वे सात समन्दर पार से खींचे चले आते हैं।

बर्नी मेयर गाँधी बनकर पहुँचे स्कूलों में

81 वर्ष की उम्र में अमेरिकन गाँधी बर्नी मेयर राजसमन्द आए और अपने प्रिय अन्दाज में महात्मा गाँधी की वेषभूषा में राजसमन्द की अनेक स्कूलों में जाकर अपनी बात कही और बच्चों के सवालों के जवाब दिए। गाँधी से सम्वाद का यह क्रम अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में राजसमन्द जिले की 8 स्कूलों में एक सप्ताह तक चला जिसमें अमेरिकन गाँधी ने लगभग 1650 बच्चों से सीधी बात की।

11 अक्टूबर, 2018 को वे जवाहर नवोदय विद्यालय पहुँचे। लगभग 400 बच्चों से खचाखच भरे सभागार में अणुविभा कार्यकर्ताओं के साथ जब बर्नी ने प्रवेश किया तो माहौल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। यह पता चलने पर कि आज अमेरिकन गांधी का 82वां जन्मदिन है, विद्यालयी बच्चों ने संगीत की मधुर ध्वनि के साथ 'हैप्पी बर्थ डे' गीत की प्रस्तुति दी। इस गीत की धुन पर बर्नी देर तक थिरकते रहे। संवाद के पश्चात बच्चों ने गम्भीर प्रश्न पूछ कर बर्नी को भी विस्मित कर दिया। भीम में बर्नी मेयर ने मुनिश्री भूपेन्द्र कुमारजी के दर्शन किए एवं वहाँ उपस्थित बच्चों एवं बहिन–भाइयों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। मुनिश्री ने उन्हें अणुव्रत आन्दोलन व अचार्यश्री महाश्रमणजी के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में चल रहे विभिन्न प्रकल्पों की जानकारी प्रदान की।

सहभागी बच्चों की अनुमानित संख्या के साथ विद्यालयों के नाम इस प्रकार हैं–

आदर्श विद्या मन्दिर, राजसमन्द (150)
सरदार भगतसिंह सी. से. स्कूल, नाथद्वारा (200)
स्मार्ट स्टडी इंटरनेशनल, नाथद्वारा (100)
जवाहर नवोदय केन्द्रीय विद्यालय, राजसमन्द (400)
राजकीय महाराणा प्रताप उ. मा. विद्यालय, दिवेर (250)
दत्तात्रेय उ. प्रा. विद्यालय, भावा (100)
महावीर बाल निकेतन, भीम (250)
नवप्रभात उ. मा. विद्यालय, एमडी (200)

13 स्कूलों के 2000 से अधिक बच्चे शामिल

उत्तराखण्ड के बाल–संस्कारविज्ञ श्री उदय किरौला बालोदय टीम के आत्मीय सदस्य बन गए हैं। बच्चों को उन्हीं के मनोनुकूल महौल में, उनके मनभावन तरीकों से बाँधे रखने में वे माहीर हैं। इसीलिए जब वे खेल–खेल में सद्संस्कारों का संदेश देते हैं तो बच्चे उसे आत्मसात करते चले जाते हैं। इस बार श्री किरौला ने अणुविभा के प्रोजेक्ट 'स्कूल विद ए डिफरेन्स' के उद्देश्यों नशामुक्ति, स्वच्छता एवं जीवन मूल्यों को कहानियों के माध्यम से बहुत ही रुचिकर ढंग से प्रस्तुत किया।

एक स्कूल में जब बच्चों को एक कहानी के प्रसंग में कहा कि जो बच्चे गुटका खाना चाहते हैं या गुटका अपने घर ले जाना चाहते हैं, वे हाथ खड़ा करें। तीन बच्चों ने हाथ खड़े कर दिए। उनको मंच पर बुला कर कारण पूछा गया तो उन्होंने बताया कि हमारे पिता एवं भाई गुटका खाते हैं। हम ले जाकर उनको डराएँगे कि यदि आपने गुटका नहीं छोड़ा तो हम भी खाना शुरू कर देंगे। उनको बताएँगे कि गुटका से केंसर हो सकता है।

अक्टूबर, 2018 के अन्तिम सप्ताह में 5 दिन चले इन कार्यक्रमों में 11 स्कूलों के 2000 से अधिक बच्चे शामिल हुए। सहभागी बच्चों की अनुमानित संख्या के साथ विद्यालयों के नाम इस प्रकार हैं–

सरस्वती पब्लिक स्कूल, सनवाड़ (200)
राजसमन्द शिक्षामित्र, राजनगर (70)
जयभारत पब्लिक स्कूल, कोठारिया (100)
गुरुनानक पब्लिक स्कूल, नौगामा (80)
आदर्श विद्या मन्दिर, कांकरोली (250)
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, मोडवा (150)
नवज्योति पब्लिक स्कूल, कोठारिया (300)
गोवर्धन राजकीय उ मा विद्यालय, नाथद्वारा (100)
सुप्रभात पब्लिक मीडिल स्कूल, सनवाड (150)
गायत्री पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल धोइंदा (450)
आदर्श विद्या मंदिर, राजसमंद (200)

बच्चों की किलकारियों की गूँज

अणुविभा के 'चिन्ड्रन'स पीस पैलेस' में इन दिनों लगातार बच्चों की किलकारियाँ गूँजती रहती हैं। आवासीय बालोदय शिविर एवं बालोदय एजुटूर में बच्चों का यहाँ आवास-प्रवास पूरे परिसर को जीवन्त कर देता है। इसके अतिरिक्त भी अनेक स्कूलों के समूह भ्रमण के लिए यहाँ आते रहते हैं।

क्षेत्रीय समन्वयकों की सम्वाद संगोष्ठी

स्कूली बच्चों में संस्कारों के सुदृढ़ीकरण हेतु 'स्कूल विद ए डिफरेन्स' प्रायोजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए विद्यालयों के नोडल प्रधानाचार्य एवं अणुविभा द्वारा मनानीत क्षेत्रीय समन्वयकों की कार्यशाला का आयोजन अणुविभा में किया गया। इसमें जिले के सभी ब्लॉक से प्रतिनिधियों ने भाग लिया। उल्लेखनीय है कि राजसमन्द के सातों पंचायत समिति क्षेत्रों में कार्यकर्ताओं के दल का गठन किया गया है।

संस्था के अध्यक्ष संचय जैन ने प्रायोजना का विस्तृत रूप से परिचय कराते हुए कहा कि विद्यालयों में मूल्य बोध, शिक्षण शैली एवं वातावरण निर्माण को प्रोत्साहन देने का यह एक प्रयास है, ताकि आने वाली पीढ़ी समाज व राष्ट्र के प्रति अपना उचित योगदान कर सके। प्रायोजना के संयोजक डॉ. राकेश तैलंग ने कहा कि प्रायोजना के माध्यम से राजसमन्द जिले के शैक्षिक परिदृश्य में सकारात्मकता एवं मूल्यपरकता का निरन्तर संवर्धन हो सकेगा, ऐसा विश्वास है। मुख्य समन्वयक सुरेश कावड़िया ने क्रियान्विति के मूल आधार बिन्दुओं को उल्लेखित किया।

इस अवसर पर आए प्रधिनिधियों ने अपने विचार रखते हुए प्रायोजना के सुचारू संचालन में अपना पूरा योगदान देने का विश्वास दिलाया। संगोष्ठी में कुम्भलगढ़ से सत्यनारायण नागौरी एवं जसराज सरगरा, आमेट से मोहनलाल दक एवं अनिल मिश्रा, भीम से सुनिल मुणोत, देवगढ़ से प्रकाश मेहता एवं लादुलाल खमेसरा, नाथद्वारा से कमलेश धाकड़ एवं साबिर शुक्रिया राजसमन्द से लक्ष्मण जैन, रमेश माण्डोत, डॉ. नीना कावड़िया एवं मीनल कावड़िया रोशन कावड़िया, करूणा मेहता आदि ने भाग लिया।

बापू बसे हैं बच्चों के दिल में

देश और दुनिया में महात्मा गाँधी की प्रासंगिकता बड़ों के लिये बहस का विषय हो सकता है लेकिन बच्चों के दिल में बापू आज भी जिन्दा हैं। राजसमन्द जिले के करीब 50 बच्चों ने इसे प्रमाणित कर दिखाया 2 अक्टूबर को "बापू : जैसा मैंने जाना" रंग संयोजन प्रतियोगिता के माध्यम से। सत्य, अहिंसा, शान्ति, राष्ट्रप्रेम, स्वतंत्रता जैसे विषयों पर बच्चों ने सुन्दर चित्र बनाए।

इस अवसर पर बच्चों ने बालोदय दीर्घाओं का अवलोकन किया और सत्यजीत रे की लघु फिल्म देखी। श्री लक्ष्मण जैन ने बच्चों से फिल्म आधारित संवाद किया। श्री सुरेश कावड़िया के निर्देशन में देवेन्द्र आचार्य व रुखसाना ने सुन्दर संयोजना की। नोबल पब्लिक स्कूल से संचालक प्रवीण गुर्जर, गायत्री विद्या मन्दिर से भावना जोशी, सोफिया पब्लिक स्कूल से जावेद, गुरुनानक पब्लिक स्कूल से शान्तिलाल कुमावत एवं आदर्श पब्लिक स्कूल से श्रीमती रेणु दीक्षित का सक्रिय सहयोग रहा।

अणुविभा में बच्चों ने मनाया बाल दिवस

स्वच्छता, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता सहित प्रकृति पर्यावरण से सीधे जुड़ाव के सोच को बच्चों के माध्यम से प्रस्तुति देने के नाम रहा बाल दिवस समारोह। मनोहर नाट्य प्रस्तुतियों से जहाँ बच्चों ने गहरा संदेश दिया, वहीं रंगों से खेलते हुए आकर्षक चित्र बनाए। राजसमंद मुख्यालय के 10 विद्यालयों के लगभग 150 बच्चे चिल्ड्रन'स पीस पैलेस में नये प्राकृतिक अनुभव से रूबरू भी हुए। तीन प्रतिनिधि विद्यालयों आदर्श विद्या मंदिर, यूनिक एकेडमी और जागृति विशिष्ट विद्यालय के बच्चों ने स्वभावगत सफाई, खुले में शौच के नकार और साम्प्रदायिक सौमनस्य व शांति अहिंसा की संस्कृति पर आधारित नाट्य मंचन से संदेश दिया। वहीं गायत्री पब्लिक स्कूल, केरियर पोइंट गुरुकुल, सोफिया पब्लिक स्कूल, आदर्श विद्या मन्दिर, ज्ञानज्योति विद्या मन्दिर, युनिक एकेडमी, जागृति विशिष्ट विद्यालय, गायत्री विद्या मन्दिर के बच्चों ने चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लिया। इस अवसर पर उपस्थित वाणिज्य कर विभाग, राजस्थान के पूर्व अतिरिक्त आयुक्त श्री पद्मेश तैलंग एवं पटना से समागत राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद के अध्यक्ष श्री तनसुख बैद ने बच्चों को प्रेरित किया।

फलित हो रहा गुरु आशीर्वाद

30 दिसम्बर 1982 को जब अणुविभा की नींव का पहला पत्थर रखा गया था, उन क्षणों में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी स्वयं पहाड़ी पर पधारे थे और अपना विरल आशीर्वाद प्रदान किया था। आज अणुविभा के परिसर में जब भी कोई अतिथि प्रवेश करता है, तो यहाँ फैले पवित्र स्पंदनों का स्पष्ट अहसास करता है।

अणुविभा का 37वाँ स्थापना दिवस

विश्व का मार्गदर्शक अणुव्रत दर्शन – मुनि सुरेशकुमार

30 दिसम्बर, 2018 को अणुव्रत विश्व भारती ने अपना 37वाँ स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर शासनश्री मुनि श्री सुरेशकुमार जी 'हरनावां' ने कहा– ''आचार्य तुलसी सपनों के सौदागर थे। उनके द्वारा मानव को सही मायने में मानव बनाने का महास्वप्न अणुव्रत है। अणुव्रत से ही हमारी विश्वव्यापी पहचान है। अणुव्रत जो कहीं सो रहा है उसे चेतना में जगाने की कवायद फिर से शुरू करना ही अणुविभा का सही मायने में स्थापना दिवस है।'' मुनिश्री ने कहा कि जब भी कोई अणुविभा आएगा उसे मोहनभाई की तपस्या और कर्मनिष्ठा सदैव याद आएगी।

समारोह को सम्बोधित करते हुए मुनिश्री सम्बोधकुमार जी ने कहा– ''अणुविभा कुदरत से जोड़ती है। इसके रोम–रोम में प्रकृति के सौंदर्य की महक यहाँ आने वालों के दिल में महकती है। जिस अणुव्रत ने मजहबों के बीच फासलों को मिटाया, जिसने तेरापंथ को आसमानी ऊँचाइयाँ दी, उस अणुव्रत की मशाल को हमें जलाए रखना है।'' मुनि श्री प्रतीककुमार जी ने कहा– ''संस्थाओं के विकास में जमीनी कार्यकर्ताओं का समर्पण होता है। अणुविभा के विकास में जिन्होंने अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया, यहाँ के कण–कण में उस मोहनभाई जैन की आत्मा बसी है।''

समारोह के मुख्य अतिथि नगर परिषद सभापति सुरेश पालीवाल ने कहा कि अणुविभा की स्थापना से लेकर अब तक मैं इससे जुड़ा रहा हूँ। हमें गर्व है कि आचार्य तुलसी के आशीर्वाद से और इस संस्था की वजह से राजसमन्द की देश–विदेश में प्रतिष्ठा बढ़ी है। समारोह के अध्यक्ष युवा गौरव तेरापंथ विकास परिषद सदस्य पदमचंद पटावरी ने कहा कि यह संस्था दूरदृष्टा आचार्य तुलसी के स्वप्न का फलित है। इसकी गूँज संयुक्त राष्ट्र तक है।

अणुविभा उपाध्यक्ष अशोक डूंगरवाल ने अणुविभा की अब तक की संघर्ष और विकास की यात्रा को रेखांकित किया। प्रकाश बोहरा व रमेश हिरण ने विचार रखे। श्रीमती नीतू गेलड़ा के अणुव्रत गीत से शुरू हुए कार्यक्रम में गर्वित बोहरा व गौरव गुंदेचा ने सुमधुर प्रस्तुतियाँ दी। इस मौके पर तुलसी स्मृति निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम रहे रमेश हिरण एवं मधु डागा, द्वितीय श्रीमती पुष्पा कर्णावट एवं तृतीय अशोक कच्छारा के साथ ही दलीचंद कच्छारा को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। नाट्य मंचन प्रतियोगिता में अव्वल रहे आदर्श विद्या मंदिर राजसमन्द, जागृति अक्षम सेवा संस्थान, यूनिक अकादमी कांकरोली व टीचर्स सक्सेस स्टोरी में सत्य नारायण नागोरी, गोविंद सनाढ्य, श्रीमती लता खींची को पुरस्कृत किया गया। संस्था ट्रस्टी गणेश कच्छारा ने समागत अतिथियों का साहित्य भेंट कर सम्मान किया। मंच संचालन संस्था मंत्री प्रकाश तातेड़ ने किया। कोषाध्यक्ष जगजीवन चौरड़िया ने आभार व्यक्त किया।

महिला संवाद यात्रा का राजसमन्द में पड़ाव

महात्मा गाँधी की 150वीं जन्म जयन्ती

महात्मा गाँधी की 150वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में देशभर की महिला सेवाकर्मियों के साथ साबरमती आश्रम से जम्मू कश्मीर के श्रीनगर की संवाद यात्रा का 23 अक्टूबर, 2018 को अणुव्रत विश्व भारती में पड़ाव रहा। इस यात्रा के माध्यम से महिलाओं के प्रति बढ़ रही हिंसा, लड़के व लड़की के बीच बरते जा रहे भेद, लड़कों को सद्संस्कारित करने की आवश्यकता, महिलाओं की प्रगतिशीलता व पिछड़ेपन के बीच बढ़ रही असमानता जैसे ज्वलन्त मुद्दों को आपसी संवाद के माध्यम से राष्ट्रीय बहस का मुद्दा बनाने की कोशिश की गई।

संस्था अध्यक्ष संचय जैन ने सभी का स्वागत किया एवं संस्था द्वारा संचालित विभिन्न बाल प्रकल्पों की जानकारी दी। बालोदय दीर्घाओं का अवलोकन कर देश के विभिन्न भागों से आई ये युवतियाँ अभिभूत हो गई। बालोदय पुस्तकालय में आयोजित संवाद में गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान की निदेशक रूपल मंजू ने यात्रा के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। राजसमन्द क्षेत्र के 50 से अधिक बुद्धिजीवी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। अणुविभा कार्यकर्ताओं के साथ यह महिला दल निकटवर्ती गाँव वीरभानजी का खेड़ा पहुँचा। गाँव की महिलाओं ने जागरूकता का परिचय दिया और खुलकर अपनी बात रखी। अणुविभा अध्यक्ष संचय जैन व बालोदय प्रभारी देवेन्द्र आचार्य कार्यक्रम में शामिल रहे।

अणुविभा कार्यसमिति 2018–20

श्री संचय जैन, उदयपुर	अध्यक्ष
श्री सोहनलाल गाँधी, जयपुर	अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री अविनाश नाहर, जयपुर	वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री अशोक चिण्डालिया, मुम्बई	उपाध्यक्ष
श्री अशोक डुंगरवाल, राजसमन्द	उपाध्यक्ष
श्री राकेश तैलंग, राजसमन्द	उपाध्यक्ष
श्री प्रताप दूगड़, कोलकाता	उपाध्यक्ष
श्री राकेश नौलखा, अहमदाबाद	महामंत्री
श्री प्रकाश तातेड़, उदयपुर	मंत्री
श्री जय बोहरा, जयपुर	संयुक्त मंत्री
श्री जगजीवन चौरड़िया, राजसमन्द	कोषाध्यक्ष
श्री रतन दूगड, कोलकाता	सदस्य
श्री मनीष गिड़िया, बंगलुरू	सदस्य
श्री सुरेश दक, बंगलुरू	सदस्य
श्री आनन्द भारती, मुम्बई	सदस्य
श्री हंसमुख भाई मेहता, मुम्बई	सदस्य
श्री राजेश सुराणा, सूरत	सदस्य
श्री रजनीकान्त शुक्ल, गाजियाबाद	सदस्य
श्री रवीन्द्र दस्सानी, सूरत	सदस्य
श्रीमती सीमा कावड़िया, राजसमन्द	सदस्य
श्री सुरेन्द्रकुमार गुप्ता, जयपुर	सदस्य
श्री दिनेश कोठारी, केलवा	सदस्य
श्रीमती अलका सांखला, सूरत	सदस्य
श्री विकास दस्सानी, हैदराबाद	सदस्य
श्री तिलोक सिपानी, दमन	सदस्य
श्री जगत संचेती, मुम्बई	सदस्य
श्री दलपत पगारिया, वापी	सदस्य
श्री अनिल चिण्डालिया, उधना	सदस्य
श्री कुंजन आचार्य, उदयपुर	सदस्य
श्री निर्मल बरड़िया, जयपुर	पदेन सदस्य
श्री सुधीर कोठारी, जयपुर	पदेन सदस्य

विशेष कार्यकारी सदस्य

श्री अशोक बागरेचा, मुम्बई
श्री भीखम कोठारी, कांकरोली
श्री देवेन्द्र कावड़िया, मुम्बई
श्री दिनेश हिंगड़, भीलवाड़ा
श्री दिनेश लोढ़ा, राजसमन्द
श्री दिनेश श्रीमाली, राजसमन्द
श्री गणपत डांगी, आमेट
श्री कमलेश धाकड़, नाथद्वारा
श्री किशोर गादिया, बंगलुरू
सुश्री कृतिका सेठिया, चेन्नई
श्री लक्ष्मण जैन, राजसमन्द
श्री लोकेश दुधेड़िया, चेन्नई
श्री महावीर संचेती, चेन्नई
श्री महेन्द्र गुर्जर, जोधपुर
श्री मनोहर कोठारी, अहमदाबाद
श्री मोहन मंगलम, लखनऊ
श्री नानालाल कोठारी, अहमदाबाद
श्री एन.के. शर्मा, कांकरोली
श्री नरेन्द्र तातेड़, मुम्बई
श्रीमती नीना कावड़िया, राजसमन्द
श्री पद्मेश तैलंग, कांकरोली
श्री प्रकाश बरड़िया, गुवाहाटी
श्री प्रकाश मेहता, देवगढ़
श्री पवन कोठारी, कांकरोली
श्री प्रवीण बाबेल, वनस्थली
श्री प्रवीण चपलोत, मुम्बई
श्री प्रमोद सोनी, कांकरोली
श्री राकेश बरड़िया, जयपुर
श्रीमती रितु धोका, राजसमन्द
श्रीमती साधना चौरड़िया, कांकरोली
श्री शंकर बड़ोला, मुम्बई
श्री सुनील जैन, उदयपुर
श्री सुनील मुणोत, भीम
श्री विमल सोनी, मुम्बई
श्री विशाल जैन, मैसुर
श्री क्षितिज व्यास, उदयपुर

न्यास मण्डल

श्री सोहनलाल गांधी, जयपुर	प्रबन्ध न्यासी
श्री सुरेश कावड़िया, राजसमन्द	संयुक्त प्रबन्ध न्यासी
श्री तेजकरण सुराणा, दिल्ली	न्यासी
श्री निर्मल रांका, कोयम्बटूर	न्यासी
श्री पंचशील जैन, जयपुर	न्यासी
श्री दौलत डागा, जयपुर	न्यासी
श्री गणेश कच्छारा, कांकरोली	न्यासी
श्री महेन्द्र जैन, जयपुर	न्यासी
श्री अशोक डोशी, उदयपुर	न्यासी
श्री जुगराज नाहर, चेन्नई	न्यासी
श्री सुनील जैन, नई दिल्ली	न्यासी
श्री संचय जैन, उदयपुर	पदेन न्यासी
श्री राकेश नौलखा, अहमदाबाद	पदेन न्यासी

परामर्श मण्डल

श्री बजरंग जैन, बंगलुरू
श्री बसंतीलाल बाबेल, सरदारगढ़
श्री भीखम सुराणा, दिल्ली
श्री दलपत लोढ़ा, जयपुर
श्री गौतम चोरड़िया, रायपुर
श्री गौतम सेठिया, चैन्नई
श्री जी एल नाहर, जयपुर
श्री हेमन्त नाहटा, दिल्ली
श्री जुगलकिशोर बैद, जयपुर
श्री जे सी चौधरी, नाथद्वारा
श्री के के रत्तु, जयपुर
श्री कमर मेवाड़ी, कांकरोली
श्री कानराज सालेचा, जोधपुर
श्री महेन्द्र बांठिया, जयपुर
श्री महेन्द्र भानावत, उदयपुर
श्री महेन्द्र कर्णावट, राजसमन्द
श्री मनीष भण्डारी, जयपुर
श्री मोहनलाल पींचा, बंगलुरू
श्री मूलचंद नाहर, बंगलुरू
श्री नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', जयपुर
श्री निर्मल गादिया, चेन्नई
श्री पन्नालाल बैद, जयपुर
श्री प्रकाश मुथा, चेन्नई
श्री राजेन्द्र सेठिया, बीकानेर
श्री राजकुमार फत्तावत, उदयपुर
श्री शरदचन्द्र पुरोहित, उदयपुर
श्री सुखराज सेठिया, दिल्ली
श्री सुमति गोठी, मुम्बई
श्री तनसुख बोहरा, केलवा
श्री उत्तम पगारिया, औरंगाबाद
श्री विजयराज सुराणा, दिल्ली
श्री विमल सुराणा, दिल्ली

अणुव्रत विश्व भारती एक बहुत ही सुन्दर और अनुकरणीय कार्य है जो हमेशा समाज को हमारे महान् आचार्यों का संदेश देता रहेगा व हमारी आने वाली युवा पीढ़ी को संस्कारित करता रहेगा ताकि वे भविष्य के अच्छे नागरिक बन सकें। मुझे यहाँ पर आकर बहुत ही अच्छा लगा। श्री मोहनलालजी जैन का भागीरथ प्रयास।

स्वामी सुमेधानन्द, दिल्ली

अनुभूत अभिव्यक्ति

स्थल की खूबसूरती भाती है। जिस स्थल पर आने से मानसिक शान्ति मिले, मन पवित्र हो जाए, जीवन की गहराई का पता चले, वह स्थल वास्तव में दुर्लभ होता है और अणुव्रत विश्व भारती इसका साक्षात् प्रमाण है। इस स्थल पर बच्चों के साथ आना पारिवारिक विकास का सुन्दर माध्यम बन सकता है।

राजेश भंसाली, तेयुप अध्यक्ष, नई दिल्ली

अणुव्रत विश्व भारती के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह एक बहुत ही मनोरम और बच्चों के लिए ज्ञानवर्द्धक स्थान है, जहाँ की हर एक चीज में देश की संस्कृति और मानवीय मूल्यों की सीख समाई हुई है।

अखाराम चौधरी, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थापित इस सेवा संस्थान ने दिल मोह लिया। बच्चों को नैतिक शिक्षा और पर्यावरण शिक्षा के लिए अत्यन्त प्रेरणादायक स्थान है। संस्थान के अधिकारियों, स्टाफ तथा सभी सेवा करने वाले सदस्यों के स्नेह आदर भरे आत्मीय व्यवहार के लिए हार्दिक आभार। यह संस्थान और भी उन्नति करे।

दिनेश सारस्वत, से.नि. अधिकारी भारतीय स्टेट बैंक, जोधपुर

अणुव्रत विश्व भारती के दर्शन अत्यधिक, बहुत ही अच्छे लगे। यहाँ विश्व की जानकारी मिली। मनुष्य जीवन में व्यक्ति को किस तरह रहना चाहिए, किस तरह के विचार होने चाहिए, वो सब सीखने को मिला।

जगमोहन बघेल, अध्यक्ष, राज. पशुधन विकास बोर्ड, जयपुर

आज यह केन्द्र देखकर ऐसा लगा कि अब तक जो जीवन जी रहे थे वो सब मिथ्या था। यहाँ आकर के देखा जीवन की सच्चाई क्या है? और किस तरह से सच्चाई का समाना करने के लिए हमें दृढ़ संकल्प लेने होंगे। किस तरह से हमारे बच्चों का सर्वांगीण विकास हो और वे सच्चाई व ईमानदारी के रास्ते पर चलें। यहाँ आकर मन शान्त हुआ और एक नया संकल्प भी लिया।

सत्यप्रकाश कुमावत, आमेट

यहाँ आकर स्वर्ग का आभास हुआ। देखने लायक स्थान है।

मोहनलाल मोदी, भीलवाड़ा

इस आधुनिक युग में ऐसे केन्द्रों की अति आवश्यकता है। यहाँ सब कुछ देख कर हमें बहुत ही अच्छा लगा, खास तौर से बच्चों को बहुत पसन्द आया। यहाँ हर परिवार को बच्चों के साथ आने की जरूरत है। मैं अपनी भावना को शब्दों में नहीं लिख सकती।

बाबुलाल विनोदबाला डागा, उपासिका, अहमदाबाद

समाज एवं राष्ट्र निर्माण के लिए जो नैतिक आदर्श मूल्यों को यहाँ प्रदर्शित किया गया है, वह आज बहुत ही उपयोगी है। हम चाहते हैं कि यह संदेश हर स्कूल में पहुँचे ताकि भावी पीढ़ी एक शान्ति सम्पन्न जीवन जी सके।

ब्रह्मचारी एकनाथ, अमृतपुरी, कोल्लम (केरल)

अणुव्रत विश्व भारती में अद्भुत नजारा था। इतना ज्ञान तथा साहित्य! आचार्य तुलसी के जीवन की ऐसी जानकारी हमने कहीं नहीं देखी। सम्पूर्ण विस्तार में 61 वर्षों का इतिहास बताया गया। हमें सभी जानकारी बहुत अच्छी लगी।

शंकरलाल रूपलाल बड़ोला, मुम्बई

एक छोटे से शहर में एक बहुत बड़ा और अद्भुत कार्य! कुछ लिख कर इसे पूरा बयान नहीं किया जा सकता। यहाँ भाव जागरण गुफा, कौतुकालय से लेकर महान् बालक कक्ष एवं वीर बालक कक्ष एवं अनेक इसी प्रकार की दीर्घाएँ हैं। धन एवं श्रम के उचित उपयोग का आश्चर्यजनक मिश्रण। काफी काम बाकी है जो हम मिल कर पूरा करेंगे। मेरा सौभाग्य है कि मैं यहाँ आया।

आदर्श कुमार बोथरा, जलगांव (महाराष्ट्र)

संस्थान के भवन को देखकर बहुत ही आनन्द की अनुभूति हुई। संस्थापक स्व. मोहनभाई जैन की जो परिकल्पना रही और उसको साकार रूप देने में उन्होंने जो श्रम किया, वह निस्संदेह सराहनीय एवं अनुकरणीय है। मैं यही कामना अभिव्यक्त करता हूँ कि अणुविभा पूज्यवरों के सपनों को और अधिक सकार करते हुए निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर रहे।

राजेन्द्र पोकरना, बगड़ीनगर (पाली)

अणुविभा के इस परिसर को देख कर ऐसा लगा जैसे गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी का जीवन चरित्र आँखों के समाने जीवन्त हो गया। दोनों महापुरुषों के जीवन को बहुत ही अच्छे ढंग से यहाँ उकेरा गया है। निस्संदेह यह जीवन में प्रेरणा देने वाला है। बहुत ही सराहनीय कार्य मोहनभाई जैन ने किया है।

हस्तीमल जैन, मुम्बई

I would like to say that this institute is a valuable and God gifted blessing for our children. I would salute that great personality, the founder of this esteemed institute. Truly, I became a child while I watched each part of this centre.

Alice Mathew, Govt. UPS, Bagwanda

बच्चों का देश

सदस्य बनिए

वार्षिक – 300रु

त्रैवार्षिक – 800रु

पंचवार्षिक – 1200रु

सम्पर्क सूत्र

चन्द्रशेखर – 94143 43100

इस अंक का सौजन्य

समाज भूषण, आत्मस्थ व अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित

श्री मोहनलाल जैन की पुण्य स्मृति में

अनन्त विकास, पंचशील, विनयशील, संचय जैन

जन्म
24 सितम्बर, 1919

निधन
24 अप्रैल, 2014

सम्पादक : संचय जैन **सह सम्पादक : राकेश नौलखा, प्रकाश तातेड़**

सम्पर्क सूत्र : विमल जैन मो. 9783816238 देवेन्द्र आचार्य मो. 9928508098

प्रकाशक : अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा), पोस्ट बॉक्स सं. 28, राजसमन्द – 313 333 (राजस्थान) दूरभाष : 02952 220516

पंजीकृत कार्यालय : अणुविभा जयपुर केन्द्र, गौरव टॉवर के सामने, मालवीय नगर, जयपुर – 302 017

e-mail ID : anuvibharaj@gmail.com, web : www.anuvibha.in, www.facebook.com/india.avb